यह सम्पूर्ण पुस्तक दो भाग में बँटी है। प्रथम भाग में 'शिवमाहात्म्यखण्ड' तथा इस द्वितीय में 'शिवोपासनाखण्ड', 'शिवोपासकखण्ड' तथा 'शैवतीर्थखण्ड' को सम्मिलित किया गया है। इनमें से प्रथम भाग अगस्त १९९९ में प्रकाशित हो चुका है। इस प्रथम भाग में परम ब्रह्म सदाशिव के तत्त्व का विस्तत विवेचन वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, सभी महापुराणों, अनेक उपपुराणों तथा अनान्य ग्रन्थों के आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के शिवोपासनाखण्ड में देवपूजा संबंधी सामान्य बातें, वैदिक एवं आगमिक विधियों से शिवपूजा; पंचाक्षर, अष्टाक्षर एवं महामत्युंजय मन्त्रों के जप–पुरश्चरण की विधियाँ; प्रदोष, शिवरात्रि तथा सोमवार व्रतों की विधियाँ; शिवसहस्रनामसहित कई प्रकार के संस्कृत एवं हिन्दी के स्तोत्र, शिवजी के कवच एवं हदय तथा मन्त्रजप एवं व्रतसंबंधी अनेक उपयोगी बातों जैसे–भूतशुद्धि, मात्रिकान्यास, स्व की प्राण–प्रतिष्ठा, श्रीकण्ठादिकलान्यास, सेवापराध, जपमाला के संस्कार की विधि आदि की विशद एवं व्यावहारिक चर्चा है।

इसके शिवोपासकखण्ड में नाना प्रकार के भक्तों के जीवनवत्तों पर प्रकाश डाला गया है। अवतारी पुरुषों में राम, कृष्ण, परशुराम तथा नरनारायण को; देवों में विष्णु, लक्ष्मी, बहस्पति, इन्द्र, धर्मराज एवं सूर्य आदि को; ऋषि–मुनियों में मार्कण्डेय, शुक्राचार्य, विश्वामित्र, दधिचि, गौतम, दुर्वासा, बाल्मीकि, व्यास, वसिष्ठ, च्यवन एवं जमदग्नि आदि को; गंधर्वों में पुष्पदन्त एवं कुवेर को; असुरों में बाणासुर एवं बलि को; ऐतिहासिक पुरुषों में शंकराचार्य, पाणिनि, भर्तहरि, कालिदास, विवेकानन्द आदि दर्जनों व्यक्ति को विवेचन के लिये चुना गया है।

शैवतीर्थखण्ड में भगवान् शिव के प्रमुख तीर्थों, जैसे द्वादश ज्योतिर्लिंगों, अष्टमूर्तियों के तीर्थों, कैलास–मानसरोवर, अमरनाथ, पशुपतिनाथ, हाटकेश्वर, मदुरा, त जौर, महाबलेश्वर तथा खजुराहो आदि तीर्थों का तीर्थयात्री की दष्टि से वर्णन किया गया है। इसके अलावा तीर्थयात्रा की विधि, तीर्थों में पालनीय नियम, तीर्थश्राद्ध तथा तर्पण आदि कई उपयोगी बातों का विस्तत वर्णन किया गया है।

पुस्तक में निष्कर्ष के तौर पर बतलाया गया है कि सभी प्रकार के मन्त्र, स्तोत्र, कवच, व्रत एवं तीर्थ समान रूप से प्रभावशाली हैं। व्यक्ति को अपनी–अपनी रुचि, योग्यता, साधन, सामर्थ्य आदि के अनुसार मंत्र, स्तोत्र, व्रत, तीर्थ एवं कवच का प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि फल के मुख्य हेतु श्रद्धा एवं भक्ति हैं। मंत्र, स्तोत्रादि सभी उपासक को उसकी श्रद्धा के अनुसार ही फल देते हैं।